जीवन के सागर की जलयात्रा (27:1-21)

प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्याय 27 अद्‌भुत है। तूफ़ानी समुद्र में जहाज़ के टूटने और बड़ी मुश्किल से उनके बचाव की कुछ सप्ताहों की उस रोमांचपूर्ण साहसिक जल यात्रा का यह विस्तृत विवरण है जिसमें महीने लग गए।[1]

इस कहानी को शामिल करने का लूका का क्या उद्देश्य था? लूका को अच्छी कहानी पसन्द थी, परन्तु आम तौर पर शब्दों की कंजूसी करने वाले लेखक के लिए यह न्याय काफ़ी नहीं लगता। इसका उत्तर सम्भवत: पुस्तक के अन्तिम भाग में लूका के मुख्य उद्देश्य में मिल सकता है, जहां पौलुस के रोम पहुंचने के विषय में बताया गया है। ''पौलुस रोम कैसे पहुंचा'' के विषय से पता चलता है कि ''पौलुस को रोम पहुंचने से रोकने के लिए शैतान ने क्या कोशिश की।''

थिस्सलुनीके की कलीसिया के नाम लिखते हुए पौलुस ने कहा, ''हे भाइयो, ... हमने बड़ी लालसा के साथ तुम्हारा मुंह देखने के लिए और भी अधिक यत्न किया। इसलिए हमने (अर्थात मुझ पौलुस ने) एक बार नहीं, बरन दो बार तुम्हारे पास आना चाहा, *परन्तु शैतान हमें रोके रहा* '' (1 थिस्सलुनीकियों 2:17, 18)। पौलुस को थिस्सलुनीके में जाने से द्वेषपूर्ण यहूदियों, प्रतिकूल परिस्थितियों और लम्बी दूरी ने रुकावट डाली, परन्तु वह जानता था कि वे सब शैतान के औज़ार ही थे।

शैतान पौलुस को थिस्सलुनीके में लौटने नहीं देना चाहता था, इसलिए वह उसे रोम में भी नहीं पहुंचने देना चाहता होगा! रोम में पहुंचकर पौलुस इस मुख्य नगर को आधार बनाकर वहां से सारे संसार में सुसमाचार का प्रचार कर सकता था और यही शैतान सहन नहीं कर सका था! हम देख चुके हैं कि शैतान ने ''रोम को देखने'' के पौलुस के स्वप्न को पूरा होने से रोकने में हर उपलब्ध साधन (प्रेरितों 19:21) अर्थात एशिया से आए गड़बड़ी करने वाले, उलझन में पड़े सिपाही, बेईमान यहूदी अगुवे, कृत संकल्प हत्यारे तथा अनिर्णायक रोमी राज्यपाल का इस्तेमाल किया। परन्तु, परमेश्वर पौलुस के साथ रहा। असफ़ल पौलुस नहीं बल्कि शैतान हुआ। शैतान के अच्छे से अच्छे (शायद मुझे सबसे गन्दे कहना चाहिए) प्रयासों के बावजूद, भी यह प्रेरित रोम की तरफ बढ़ता जा रहा था (27:1)।

क्या शैतान ने हार मान ली? बिल्कुल नहीं! बल्कि, स्पष्टत: उसका प्रचण्ड क्रोध सारी सीमाएं पार कर गया। अध्याय 27 और 28 के शुरू में, हम देखेंगे कि शैतान पौलुस की यात्रा पूरी होने से रोकने के लिए कुछ भी और सब कुछ अर्थात मूर्ख लोगों, भंजनशील जहाज़ों और प्रकृति के प्रकोपों[2] (तेज़ हवाओं, क्रोधित हवाओं, ख़तरनाक बालूभिरतियों, और विषैले सांपों तक) का इस्तेमाल करेगा! पौलुस इस घातक आक्रमण से कैसे बच निकला? वैसे ही जैसे वह यरूशलेम और कैसरिया में शैतान के आक्रमणों से बच निकला था अर्थात परमेश्वर के पूर्वप्रबन्ध से और परमेश्वर में विश्वास रखकर!

टीकाकारों को यह ध्यान दिलाना अच्छा लगता है कि ''अध्याय 27 में हमें पौलुस का एक और पक्ष मिलता है,'' जैसे कि कहानी को बताने के लिए लूका का यही उद्देश्य हो। यह सत्य है कि हम पौलुस को एक अन्य भूमिका में अर्थात (गैर मसीही) लोगों में एक नेता के रूप में देखते हैं। परन्तु, लूका ने पौलुस पर नहीं, बल्कि पौलुस के परमेश्वर पर ज़ोर दिया था। जैसा कि हम देखेंगे, लूका ने यह स्पष्ट किया कि उस तूफ़ान में जहाज़ को बचाना *मनुष्य के लिए असम्भव* था; परमेश्वर का बीच में आना बहुत आवश्यक था। इस वृत्तांत का सार 23 से 25 आयतों में मिलता है, जहां पौलुस ने अपने साथी यात्रियों के साथ बात की थी:

> ... परमेश्वर जिस का मैं हूं, और जिस की सेवा करता हूं, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे पास आकर कहा। हे पौलुस मत डर; तुझे कैसर के साम्हने खड़ा होना अवश्य है: और देख, परमेश्वर ने सबको जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दिया है। इसलिए, हे सज्जनों ढाढ़स बान्धो; क्योंकि मैं परमेश्वर की प्रतीति करता हूं, कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा।

अध्याय 27 लिखने का लूका का दोहरा उद्देश्य था: (1) यह दिखाना कि परमेश्वर कैसे पौलुस के जीवन में काम करता रहा, और उसके द्वारा (2) यह दिखाना कि कैसे नरक की शक्तियां भी परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों को नहीं रोक सकीं (और न ही रोक सकती हैं)। क्या इसका हमारे साथ कुछ सम्बन्ध है? निश्चित तौर पर है। शैतान हमें नाश करने और हमारे जीवनों में परमेश्वर के उद्देश्यों को निष्फल करने की कोशिश में लगा रहता है (1 पतरस 5:8)। हम में से हर एक को जीवित रहने के लिए परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है। जीवन में आने वाले तूफ़ानों का सामना करने के लिए अध्याय 27 हमें भरोसा दिला सकता है।

''जीवन के तूफ़ानों'' की बात करूं, तो मुझे गलत न समझें। जब लूका ने इटली जाने वाले व्यापारिक जहाज़ के ख़तरनाक तूफ़ान में घिरने की बात की तो वह कोई रूपकात्मक प्रयोग नहीं कर रहा था; आंधियां सचमुच थीं, और ख़तरा भी वास्तविक था। फिर भी, कुछ टीकाकार पौलुस की रोम यात्रा और हमारे अपने जीवन की यात्रा की एक या दो तुलनाओं का विरोध करते हैं। यह लगभग ऐसा ही है जैसे लूका समुद्री यात्रा का अपना संस्करण *पिलग्रिम'ज़ प्रोग्रैस* लिख रहा हो।[3]

आपको अध्याय 27 में ले जाते हुए, मैं चाहूंगा कि आप इसका आनन्द एक रोमांचकारी जोखिम के रूप में उठाएं। साथ ही, मैं चाहूंगा कि आप अपने जीवन के अनुभवों के साथ समानताओं को भी देखें।[4] पौलुस की यात्रा की तरह, हमारे जीवन के बहुत से दिन अच्छे भी होते हैं और बुरे भी तथा किसी भी समय कुछ भी घटित हो सकता है! इस पाठ में, हम ''विपरीत हवाओं'' और तूफ़ान के महत्व पर रोशनी डालेंगे, ताकि हम पौलुस की समस्याओं को समझ सकें। अगले पाठ में, हम अध्याय 27 के नाटकीय निष्कर्ष का अध्ययन करेंगे, ताकि हम परमेश्वर के समाधान की प्रशंसा कर सकें।

हमने ''... जहाज़ ... खोल दिया'' (27:1-3)

पौलुस ने कैसर से अपील की थी (25:11)। अगस्त, 59 ई.[5] में उसे रोम भेजने की तैयारी अन्ततः पूरी हो गई थी। ''जब यह ठहराया गया, कि हम जहाज पर इतालिया को जाएं, तो उन्होंने पौलुस और कितने और बन्धुओं को भी यूलियुस नामक औगस्तुस की पलटन के एक सूबेदार[6] के हाथ सौंप दिया'' (आयत 1)।

आयत 1 में पहली बात जो हमारा ध्यान आकर्षित करती है वह है शब्द ''हम''। लूका पौलुस के साथ यरूशलेम में गया था (21:17) और पौलुस के साथ उसने रोम में भी जाना था! आगे दूसरी आयत पर ध्यान देने पर, हम देखते हैं कि पौलुस के मित्रों में से एक और ''अरिस्तर्खुस नामक थिस्सलुनीके का एक मकिदूनी'' (20:4) यरूशलेम में उसके साथ गया था, जहाज़ में ही था।[7]

फिर एक दुखद वाक्यांश ''कितने और बन्धुओं''[8] से हम चौंक जाते हैं। अनुवादित यूनानी शब्द ''कितने'' का अर्थ है ''*कई* तरह के अन्य लोग।''[9] दूसरे कैदी सम्भवतः घोषित अपराधी थे जिन्हें रोम ले जाया जा रहा था ताकि वहां उन्हें लोगों के मनोरंजन के लिए जंगली जानवरों के सामने फैंका जा सके।[10] ऐसा ज़ालिम था वह समाज जिसमें वे लोग रहते थे।

फिर, आयत 1 से पता चलता है कि पौलुस को ''यूलियुस नामक औगुस्तुस की पलटन के एक सूबेदार'' के सामने लाया गया। ''औगुस्तुस की पलटन'' का किसी ''अगस्त'' (अर्थात, सम्राट) से कोई सम्बन्ध था। कई विद्वानों का विचार है कि यह ''राजा की ... पलटन'' थी ''जिसके अधिकारी और लोग सशस्त्र दल और संदेशवाहक के कार्य के लिए सारे राज्य में आते-जाते थे।''[11] सम्भवतः फेस्तुस और स्थानीय रोमी अधिकारियों[12] ने एक समारोह में पौलुस की ज़िम्मेदारी यूलियुस पर डाल दी थी। मैं राज्यपाल को अपनी आधिकारिक रिपोर्ट यूलियुस के हाथ में देते देख सकता हूं, और उसे सावधानीपूर्वक यह समझाते हुए सुनता हूं कि पौलुस एक रोमी नागरिक है जिस पर आरोप सिद्ध नहीं हुआ और उसके साथ विशेष रूप से आदरणीय व्यवहार होना चाहिए।

औपचारिकताएं पूरी की गईं, और सब लोग जहाज़ पर चढ़ गए। फिर उन्होंने जहाज़ खोल दिया।[13] लूका ने कहा ''और अद्रमुत्तियुम के एक जहाज पर[14] जो आसिया के किनारे

की जगहों में जाने पर था, चढ़कर हमने उसे खोल दिया'' (27:2क)। इटली जाने वाला कोई जहाज़ न मिलने पर उन्होंने रोम जाने वाला कोई अन्य जहाज़ लेने के बजाय इसी जहाज़ पर बैठने की योजना बनाई। सब कुछ ठीक ठाक रहता, तो उन्होंने अक्तूबर के अन्त तक रोम पहुंच जाना था।

लूका ने लिखा, ''दूसरे दिन हम ने सैदा में लंगर डाला'' (आयत 3क), जो कैसरिया से सत्तर या इससे कुछ अधिक मील दूर उत्तर की ओर फीनीके में एक व्यापारिक ठहराव था। बन्दरगाह पर ठहरते समय, अधिकतर कैदियों को डैक (अर्थात जहाज की छत) के नीचे बन्धा रहने दिया जाता था, परन्तु ''यूलियुस ने पौलुस पर कृपा करके उसे मित्रों के यहां जाने दिया (निस्संदेह सिपाहियों के साथ) कि उसका सत्कार किया जाए''[15] (आयत 3ख)। वे ''मित्र'' सम्भवत: साथी मसीही थे (3 यूहन्ना 14; देखिए यूहन्ना 15:5)।[16] शायद पौलुस उनसे फीनीके से होते हुए (प्रेरितों 12:25; 15:3) या यरूशलेम जाते हुए सूर में एक सप्ताह ठहरने के समय (21:3, 4) मिला था या शायद वह उनसे पहले कभी नहीं मिला था। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; एक साथी मसीही हमेशा एक मित्र होता है (या उसे होना चाहिए)। अपनी जीवन यात्रा में, हम सभी को मित्रों की आवश्यकता होती है (नीतिवचन 17:17)।

''हवायें विपरीत थीं'' (27:4-8)

सीदोन से, ''जहाज खोलकर हवा विरुद्ध होने के कारण हम कुप्रुस की आड़ में होकर चले'' (आयत 4)। गर्मी के मौसम में ये हवायें पश्चिम से चल रही थीं, इसलिए वे सीधे भूमध्यसागर में नहीं जा सके।[17] जहाज़ों की बनावट ऐसी थी कि वे हवा के विरुद्ध नहीं चल सकते थे (आयत 15), इसलिए वे कुप्रुस के टापू के उत्तर की ओर चले गए जहां उनका थोड़ा बचाव हो सकता था।

पौलुस परमेश्वर के स्पष्ट उद्देश्य से रोम जा रहा था, फिर भी हवाएं उसके विरुद्ध थीं। इस तथ्य का कि आपने अपना जीवन परमेश्वर की इच्छा के आगे समर्पित कर दिया है, का यह अर्थ नहीं कि आपके दिन हमेशा सूर्य की भांति चमकते रहेंगे और हवाएं आपके साथ ही चलेंगी। जैसे कि सभी अनुभवी जीवन यात्री जानते हैं, समय-समय पर ''विपरीत हवायें'' चलती ही रहती हैं।

कुप्रुस के उत्तर से चलकर, उन्होंने उन सभी जगहों को पार किया जिन्हें पौलुस अच्छी तरह जानता था: वे ''किलिकिया [जहां पौलुस का गृह नगर, तरसुस था] और पंफूलिया [जहां पहली मिशनरी यात्रा में वह और बरनबास उतरे थे के निकट से समुद्र में होकर (13:13)]''[18] (आयत 5क) गए। लगभग दो सप्ताह बाद,[19] वे एशिया माइनर के दक्षिण-पश्चिम राज्य ''लूसिया के मूरा में उतरे'' (आयत 5ख)।

मूरा मिसर से रोम को अनाज ढोने वाले जहाज़ों के मार्ग में एक प्रमुख बन्दरगाह थी।[20] वहां पर सूबेदार को गेहूं से लदा हुआ (आयत 38) ''सिकन्दरिया का एक जहाज[21] इतालिया जाता हुआ मिला'' (आयत 6क)। अनाज ढोने वाले ये जहाज़ बहुत बड़े-बड़े[22]

थे (इस जहाज़ में सामान के अलावा दो सौ छिहत्तर लोग आ सकते थे[23] [आयत 37])। ऐसे बहुत से जहाज़ रोमी सरकार के अनुबन्ध के अधीन थे, जिससे यूलियुस जैसे रोम के प्रतिनिधियों को विशेष पद मिलता था। अभी भी अक्तूबर तक रोम पहुंचने की आशा से, सूबेदार ने सबको बड़े जहाज़ में चढ़ा दिया (आयत 6ख)।

वे एशिया माइनर के किनारे-किनारे समुद्र में पश्चिम की ओर निकल गए। परिस्थितियों में कोई सुधार नहीं हुआ; सच तो यह है कि मौसम और खराब हो गया। वे ''बहुत दिनों तक[24] धीरे-धीरे चलकर कठिनता से'' एशिया के रोमी इलाके के दक्षिणी सिरे में ''कनिदुस के साम्हने पहुंचे'' (आयत 7क)। उन्हें समुद्र के रास्ते यूनान (अखया) जाने की उम्मीद थी, परन्तु ''हवा [उन्हें] आगे बढ़ने न देती थी'' (आयत 7ख)।

क्या आपके जीवन में कभी ऐसे ''कठिन'' दिन आए हैं जब आपकी कोई भी योजना सिरे नहीं चढ़ पाई हो? सिकन्दरिया के अनाज ढोने वाले जहाज़ के कुछ लोग आपके साथ सहानुभूति रख सकते हैं।

फिर से टापू की आड़ ढूंढ़ी गई, इस बार दक्षिण की ओर कई मील दूर यह क्रेते का टापू था।[25] समुद्री यात्रा के बहुत से कठिन दिनों के बाद, वे टापू के पूर्वी सिरे पर सलमोने के सामने से होकर दक्षिणी तट रेखा के साथ-साथ ''क्रेते की आड़ में'' (आयत 7ग) पश्चिम की ओर निकल गए। ''किनारे-किनारे कठिनता से'' (आयत 8क) निकलने के बाद, अन्त में वे ''शुभलंगरबारी नामक एक जगह पहुंचे''[26] (आयत 8ख) जो उस टापू पर लगती कच्ची बन्दरगाह थी। वहां पर उन्होंने हवा के बदलने की प्रतीक्षा में, कई दिन तक लंगर डाले रखे।

यदि आपको कभी अपनी योजना को पूरा करने के लिए अनुकूल परिस्थितियों की प्रतीक्षा करनी पड़ी हो तो आप बता सकते हैं कि उनकी घबराहट कैसी होगी।

''जलयात्रा अब जोखिम भरी थी'' (27:9-13)

प्रतिदिन, अक्तूबर के अन्त तक रोम में पहुंचने का लक्ष्य प्राप्त होना कठिन दिखाई देता था। ''जब बहुत दिन बीत गए, और जलयात्रा में जोखिम होता था'' (आयत 9क)। भूमध्यसागर में जाने के लिए ''जोखिम भरा समय'' सितम्बर के मध्य से नवम्बर 11 तक होता था। 11 नवम्बर के बाद, बसन्त तक समुद्र में जाना बन्द कर दिया जाता था; लम्बे समय तक अन्धकारमय आकाश नौवहन को असम्भव बना देता था।[27] जहाज अब उस ''ख़तरनाक'' समय में था; यहां तक ''कि उपवास के दिन अब बीत चुके थे'' (आयत 9ख)। ''उपवास'' यहूदियों के प्रायश्चित के दिन को कहा गया है (लैव्यव्यवस्था 16:29; 23:26, 27), जो 59 ई. में 5 अक्तूबर को पड़ा था।[28]

जहाज़ पर बैठे लोग जानते थे कि समय निकलता जा रहा है। वह मौसम जिसमें यात्रा करना असम्भव था, निकट आ रहा था, सो जहाज़ के संचालन करने वाले लोगों[29] (आयत 11) ने विचार किया कि क्या किया जाए। उन्होंने फैसला किया कि शुभलंगरबारी

''जाड़ा काटने के लिए अच्छा न था'' (आयत 12क)। यह समुद्र के सामने था; इस मौसम में जहाज की कोई सुरक्षा नहीं होनी थी और कुछ सामान में भी पानी भर सकता था। फिर, वहां कोई बड़ा नगर भी नहीं था जहां वे जाड़े में आराम से रह सकते (निकट का ''लूसिया नगर'' [आयत 8ग] छोटा नगर था)। दूसरी ओर, फीनिक्स पश्चिम की ओर केवल चालीस मील दूर था। यह एक बड़ा नगर था जिसमें सुरक्षित बन्दरगाह थी। सर्दी के कठिन समय के दौरान वे और उनका जहाज़ वहां पर काफ़ी अच्छी स्थिति में रह सकते थे।

यह सुनकर कि वे शुभलंगरबारी से जाने का विचार कर रहे थे,[30] पौलुस परेशान हो गया। वह सम्भवत: ''उस जहाज में यात्रा करने वालों में सबसे अनुभवी था।''[31] लूका ने भूमध्यसागर में उसकी ग्यारह जल यात्राओं को दर्ज किया (रोम की यात्रा को छोड़कर), जिसमें उसने कम से कम 3500 मील की यात्रा की थी और पौलुस ने कुछ और यात्राएं भी कीं थी जिन्हें लूका ने दर्ज नहीं किया। तीन बार उसका जहाज़ टूटा था[32] और उसने ''एक रात दिन ... समुद्र में काटा'' था (2 कुरिन्थियों 11:25घ)। इसलिए, पौलुस वह सब बताने से नहीं हिचकिचाया जो उसका अपना विचार था: ''हे सज्जनो मुझे ऐसा जान पड़ता है, कि इस यात्रा में विपत्ति और बहुत हानि न केवल माल और जहाज की बरन हमारे प्राणों की भी होने वाली है'' (आयत 10)।

क्या पौलुस की यह बात आत्मा की प्रेरणा से थी? मैं यह मानता हूं कि उसकी बातें अतीत में उसके अपने अनुभवों पर आधारित थीं: (1) पौलुस ने उन्हें स्वर्गीय स्रोत से नहीं बताया (जैसे कि उसने बाद में घोषणा की, आयत 23)। (2) यूनानी शब्द के अनुवाद ''ऐसा जान पड़ता है'' का अर्थ हो सकता है ''पिछले अनुभव से लगता है।'' (3) आगे की घटनाएं वैसे नहीं घटित हुईं जैसे उनकी भविष्यवाणी की गई थी (किसी जान की हानि नहीं हुई थी; आयतें 22, 44)।[33]

जहाज़ में बैठा सर्वोच्च अधिकारी, यूलियुस इन सारी बातों से अप्रभावित था। शायद उसने सोचा ''मिस्टर तम्बू बनाने वाले/रब्बी तुम इसके बारे में क्या जानते हो? यदि विशेषज्ञ कहते हैं कि हम सम्भाल सकते हैं, तो तुम बहस करने वाले कौन होते हो?'' ''सूबेदार ने पौलुस की बातों से मांझी और जहाज के स्वामी की बढ़कर मानी'' (आयत 11)। ''इसलिए बहुतों का[34] विचार हुआ, कि वहां से जहाज खोलकर यदि किसी रीति से हो सके, तो फीनिक्स में पहुंचकर जाड़ा काटें: यह तो क्रेते का एक बन्दर स्थान है जो दक्खिन-पच्छिम और उत्तर-पच्छिम[35] की ओर खुलता है'' (आयत 12ख)।

जीवन में बुरे निर्णय लेने का यदि कोई उत्कृष्ट उदाहरण हो तो वह यही है कि भले लोगों के परामर्श की उपेक्षा कर दें (नीतिवचन 1:5; 19:20; प्रकाशितवाक्य 3:8); लोगों और सिद्धांतों के बजाय अपने लाभ और आनन्द की चिन्ता करने वाले ''विशेषज्ञों'' की बात पर ध्यान दें (नीतिवचन 12:5; 1 कुरिन्थियों 3:18-20) और जो बातें ज़्यादा लोग कहते हैं वही मानें (निर्गमन 23:2; मत्ती 7:13)।

ध्यान दें कि उसके बाद के भयानक परिणामों के लिए पौलुस दोषी नहीं था बल्कि यह दोष दूसरों का था। कई बार हम तूफ़ानों को स्वयं ही बुलाते हैं (योना 1:12), परन्तु

कई बार दूसरों का दोष भी होता है। हो सकता है कि कई बार हम अपने व्यक्तिगत गलत निर्णयों से नहीं बल्कि, पौलुस की तरह अपने पक्ष में वोटों के न होने से कष्ट उठाते हैं।

पहले तो, यह लगा कि बहुसंख्या ने बहुत अच्छा निर्णय लिया था क्योंकि हवा में जिस बदलाव की वे प्रतीक्षा कर रहे थे वह हो गया था। ''जब कुछ-कुछ दक्खिनी हवा बहने लगी, तो यह समझकर कि हमारा मतलब पूरा हो गया, लंगर उठाया और किनारा धरे हुए क्रेते के पास से जाने लगे'' (प्रेरितों 27:13)। अक्सर तूफ़ानों के आने से पहले जीवन हमें शांत कर देता है।

''आशा जाती रही'' (27:14-21)

गंतव्य तक पहुंचने से कुछ घण्टे पहले, घोर विपत्ति उन पर आ पड़ी। ''थोड़ी देर में वहां से [क्रेते के ऊंचे पहाड़ों से] एक बड़ी आंधी उठी, जो यूरकुलीन कहलाती है'' (आयत 14)। ''यूरकुलीन'' तूफ़ान जैसे एक[36] ''उत्तर-पूर्वी'' नाविक का नाम था।[37] क्रेते की आड़ से बहने के बाद, जहाज किसी बन्दरगाह पर नहीं लग पाया और समुद्र में बह गया। ''जब यह जहाज पर लगी, तब वह हवा के साम्हने ठहर न सका, सो हमने उसे बहने दिया, और उसी तरह बहते हुए चले गए'' (आयत 15)। जहाज़ अब हवा और लहरों की दया के सहारे था।

कई घण्टों तक दक्षिण-पूर्व की ओर बहने के बाद वे ''कौदा नामक एक छोटे से टापू की आड़ में'' चले गए (आयत 16क)। कुछ देर का आराम मिलने के बाद, उन्होंने जहाज़ को थोड़ा बहुत चलने योग्य बनाने के लिए जल्दी-जल्दी काम किया। लूका ने भी जहाज के पीछे खिंच गई (लाइफबोट) रक्षानौका को बचाने में मदद के लिए जल्दी की। इस संघर्ष को (शायद अपने फफोलों को) याद करते हुए, उसने कहा, ''बहते-बहते हम कठिनता से डोंगी को वश में कर सके'' (आयत 16ख)।[38]

''मल्लाहों ने उसे [किश्ती को] उठाकर, अनेक उपाय करके जहाज को नीचे से बान्धा'' (आयत 17क)। बान्धने के लिए रस्सों या ज़ंजीरों को पोत पर रखा जाता था और तूफ़ान में जहाज़ के साथ जोड़े रखने के लिए चरखी से कसा जाता था।[39] फिर, उन्होंने ''सुरतिस के चोरबालू पर टिक जाने के भय से पाल और सामान उतार दिया'' (आयत 17ख)। ''सुरतिस के चोरबालू'' उत्तरी अफ्रीका के तट पर फैला हुआ जहाज़ों का कब्रिस्तान था, जिससे नाविक भय खाते थे। यद्यपि वह क्षेत्र दक्षिण की ओर बहुत मील दूर था, परन्तु उन्हें मालूम था कि तूफ़ान में जहाज़ कितनी दूर तक बह सकता है।[40] जहाज़ के धीमा होने की आशा से, उन्होंने ''पाल और सामान उतार'' दिया। उस समय तक जहाज़ छोटे टापू की सुरक्षा से निकल चुका था; वे अपने आप को रोक न पाए और ''बहते हुए चले गए'' (आयत 17ग)।

आप प्राचीन काल के उन नाविकों से कुछ सीख सकते हैं। जीवन में तूफ़ान घिर आने पर क्षति को कम से कम करने के लिए जो कुछ भी आप कर सकते हैं, कीजिए। ''पिछले द्वार का फट्टा गिरा लें,''[41] और तूफ़ान के ख़तरों से बच निकलने की तैयारी कर लें।

यदि जहाज़ में लोग यह उम्मीद कर रहे थे कि तूफ़ान अपने आप थम जाएगा तो उन्हें निराशा मिली। दूसरे दिन भी उन्हें ''आंधी से बहुत हिचकोले और धक्के'' लग रहे थे (आयत 18क)। अपने आपको उनकी जगह रखिए। आंधी के शोर, लकड़ियों के टूटने और रस्सियों के खिंचने की आवाज़ सुनिए। काले बादलों, तेज हवाओं को देखिए जो डैक (जहाज की छत) पर से होकर जाती हैं। प्रचण्ड समुद्र पर जहाज़ ऊपर उठता और पानी में हिचकोले खाता है। नमकीन पानी की फुहार आपके मुंह पर पड़ती है और खारा पानी गिरने पर आप अपना मुंह बन्द कर लेते हैं। समुद्र में हो या जीवन में, तूफ़ान एक ख़तरनाक सच्चाई है।

निराशाजनक समयों में साहस की आवश्यकता होती है। ''दूसरे दिन वे जहाज का माल फेंकने लगे'' (आयत 18)। उनका जीवन सामान पर निर्भर था, परन्तु जीविका से अधिक उन्हें अपने जीवनों की चिन्ता थी। ''और तीसरे दिन उन्होंने अपने हाथों से जहाज का सामान फैंक दिया''[42] (आयत 19)। हलका करने के लिए, उन्होंने जहाज़ पर से वह सब कुछ फैंक दिया जिसकी उन्हें आवश्यकता नहीं थी।[43]

तूफ़ान बन्द नहीं हुआ: ''बहुत दिनों तक न सूर्य न तारे दिखाई दिए'' (आयत 20क)। उन दिनों उनकी स्थिति का अनुमान लगाने के लिए न तो कोई दिग्सूचक था और न ही कोई सेक्सटैंट (कोणिक दूरी मापने का यन्त्र)। नौवहन दिन में सूर्य और रात को तारों पर निर्भर था। इसलिए, उन्हें कुछ पता नहीं था कि वे कहां हैं। उन्हें केवल इतना ही पता था कि वे किसी भी पल सुरतिस के चोरबालू में पानी भरकर या किसी छिपी हुई समुद्री चट्टान से टकराकर डूब सकते हैं।

लगभग दो सप्ताह तक, तूफ़ान ने जहाज़ और इसके यात्रियों को तब तक उलझाए रखा जब तक वे एक दूसरे से दूर होने के लिए तैयार न हो गए। लूका ने लिखा है कि, ''जब बहुत दिनों तक न सूर्य, न तारे दिखाई दिए, और बड़ी आंधी चल रही थी, तो अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही'' (आयत 20)।

भीगे हुए, सर्दी से सुन्न लोग, निढाल, भूख से कमज़ोर हो चुके थे। ''वे बहुत उपवास कर चुके'' (आयत 21क) थे; ''तूफ़ान से उन्हें साधनों, समयों, और आम भोजन तैयार करने या खाने की पसन्द का ध्यान नहीं रहा था।''[44] ध्यान दें कि हताशा की उस तस्वीर में लूका ने अपने आपको भी शामिल किया: ''अन्त में *हमारे* बचने की सारी आशा जाती रही'' (आयत 20)। क्या ''हमारे'' शब्द में पौलुस को भी शामिल किया गया था? शायद। स्वर्गदूत ने पौलुस को दर्शन देकर उसे समझाया था, कि ''मत डर'' (आयत 24क)। इतने ज़ोर से और देर तक तूफ़ान की मार पड़ने पर तो बड़े से बड़ा भी झुक सकता है।

आप में से कई लोग जानते हैं कि आपकी शादी के दूर होते जाने का, निराशा के दुखों के दलदल पर चलने का, नाकामी के भव्वर में डूबने का, भावनात्मक और आत्मिक रूप से मार्ग से भटकने का क्या अर्थ है। आप जानते हैं कि कई दिन तक अंधेरे में रहने का क्या अर्थ है। आपको भी घुटनों के बल झुकना पड़ा है।

सारांश

हमारे पाठ को समाप्त करने की जगह दुखद, ही नहीं अजीब भी है: ''अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही'' (आयत 20ग)। बाद में, हम देखेंगे कि परमेश्वर ने कैसे उन्हें फिर से आशा दिलाई जिससे उनका बचाव हुआ। अब हमें चाहिए कि जीवन में हर दिन तूफ़ानों की मार से आने वाली निराशा की भावना से संघर्ष करें।

ऐसी स्थिति में आकर हम अक्सर पुकारते हैं, ''क्यों? हे प्रभु तू इन तूफ़ानों को हम पर आने क्यों देता है?'' अपनी कहानी के अन्त से आगे देखने पर, हम इस विषय में कुछ उत्तर दे पाएंगे कि परमेश्वर ने पौलुस पर तूफ़ान आने की अनुमति क्यों दी। तूफ़ान में से बचकर निकलने से सम्भवत: पौलुस का विश्वास और दृढ़ हो गया। उसे एक बार फिर और नाटकीय ढंग से दिखाया था कि परमेश्वर अपने लोगों की सम्भाल करता है। फिर, तूफ़ान के कारण पौलुस को ऐसे अवसर मिले जो उसे वैसे नहीं मिल सकते थे। उदाहरण के लिए, उसे प्रभु पर भरोसा दिखाने का अवसर मिला। (अविश्वासी लोग यही देखते हैं कि तूफ़ान के आने पर आपकी प्रतिक्रिया क्या होती है।) पौलुस को 273 मूर्तिपूजकों को सच्चे परमेश्वर के बारे में बताने का अवसर भी मिला! सम्भवत: किनारे पर सुरक्षित पहुंचकर, वे भी यीशु के विषय में सुनने को तैयार थे। अन्त में, तूफ़ान से पौलुस और दूसरे लोगों को भी लाभ हुआ। परन्तु, वाक्यांश ''अन्त में'' पर ध्यान दें। *जब* तूफ़ान पूरे ज़ोर पर था, तो वे लाभ स्पष्ट *नहीं* थे। इसी प्रकार, जब हम पर कष्ट आते हैं, तो कई बार यही समझना कठिन हो सकता है कि हमारे कष्ट से क्या भलाई निकलेगी।

जब तूफ़ान के कारण हमारे घुटने झुक जाएं तो हमें क्या करना चाहिए? वैसे ही करें जैसे पौलुस ने किया था (आयत 24) अर्थात ऐसे प्रार्थना करें जैसे आपने पहले कभी नहीं की (फिलिप्पियों 4:6; याकूब 5:13) और प्रभु पर भरोसा रखें जो तूफ़ानों के बारे में इतना अधिक जानता है जितना हम कभी नहीं जान सकते (2 कुरिन्थियों 1:9, 10; 2 तीमुथियुस 1:12)।

मैं इसे एक आदमी की कहानी सुनाकर समाप्त करता हूं जिसने प्रभु पर भरोसा रखना सीखा। 1873 में, होराशियो जी. सपेफोर्ड नामक, शिकागो के एक व्यापारी ने, छुट्टियों में अपने परिवार को यूरोप ले जाने का फैसला किया। उसने एक फ्रांसीसी जहाज़ में सीट बुक करा ली, परन्तु आखिरी समय पर कार्यालय के काम के कारण उसे रुकना पड़ा। बाद में यूरोप में मिलने की योजना बनाकर उसने अपनी पत्नी को चार बेटियों सहित जहाज़ पर बिठा दिया। नवम्बर 22 को उस जहाज़ की किसी दूसरे जहाज से टक्कर हो गई। बारह मिनटों में, वह जहाज़ सागर के गर्भ में समा गया, जिससे सपेफोर्ड की चार पुत्रियों समेत 226 लोग मारे गए। 9 दिनों बाद, जब वहां से बचकर निकले लोग इंग्लैंड पहुंचे, तो उसकी पत्नी ने उसे दो शब्दों का संदेश भेजा: ''अकेली बची हूं।'' उसने अपनी पत्नी से मिलने के लिए तुरन्त इंग्लैंड जाने वाले जहाज़ में सीट बुक कराई। एक रात जहाज़ के कप्तान ने उसे अपने केबिन में बुलाकर कहा, ''मैं बता सकता हूं, कि इस समय हम उसी जगह पर हैं जहां वह जहाज़ डूबा था जिसमें आपकी पुत्रियां थीं।'' सपेफोर्ड अपने केबिन में लौट

गया। वहां, ''मौत की घाटी की छाया'' में उसने एक अंग्रेज़ी गीत लिखा जिससे दो दशकों से लोगों को सांत्वना मिलती आ रही है। उस अंग्रेज़ी गीत का अनुवाद यह है:

जब नदी की तरह शान्ति मेरे मार्ग में आती है,
जब दुख सागर की लहरों की तरह ज़ोर मारते हैं;
मेरा भाग्य जो भी हो, तूने मुझे यह कहना सिखा दिया है,
''आराम में है, मेरी रूह आराम में है।''

आपका भाग्य कुछ भी हो, जब ''दुख सागर की लहरों की तरह ज़ोर मारें,'' तो मेरी प्रार्थना है कि आप यह कहने के योग्य हो जाएं, ''आराम में है, मेरी रूह आराम में है।''[45]

विज़ुअल-एड नोट्स

इस और अगले पाठ को सिखाने के लिए एक मानचित्र है। अपने सुनने वालों को पौलुस की रोम यात्रा का अनुसरण करने में सहायता के लिए बोर्ड पर बड़ा नक्शा (देखिए पृष्ठ 191) बना लें।

पाद टिप्पणियां

[1]इस और अगले पाठ का अध्ययन ''पौलुस की रोम यात्रा'' (देखिए पृष्ठ 191) का मानचित्र सामने रखकर कीजिए। [2]बहुत से पद (विशेषकर भजन संहिता में) ज़ोर देते हैं कि परमेश्वर प्रकृति का (जिसमें तूफ़ान भी शामिल हैं) परमेश्वर है, इसलिए इस पाठ में प्राकृतिक आपदाओं में परमेश्वर और शैतान के योगदान में फिलॉस्फिकल चर्चा को शामिल किया जा सकता है। अय्यूब की पुस्तक के अनुसार, हमें और अच्छे बनाने के लिए प्राकृतिक विपत्तियों को *अनुमति* परमेश्वर देता है, जबकि शैतान उनका इस्तेमाल हमें शारीरिक और आत्मिक रूप से नष्ट करने के लिए करता है। ऐसे जटिल विषय का यहां समय और स्थान तो नहीं लगता, परन्तु किसी भी प्रकार के प्रश्न का उत्तर देने के लिए तैयार रहना समझदारी है। एक मुख्य बात जो यहां की जा सकती है वह यह है कि अध्याय 27 में 1 कुरिन्थियों 10:13 की सच्चाई (और अय्यूब की पुस्तक भी) प्रस्तुत करती है कि परमेश्वर शैतान की शक्ति को *सीमित* कर देता है और परमेश्वर हमेशा ''निकास का मार्ग'' उपलब्ध करवा देता है जिसका हम इस्तेमाल कर सकते हैं या उसका इन्कार। [3]*पिलग्रिम'ज़ प्रोग्रैस* 1600वें में लिखी जॉन बनियन की रूपकात्मक पुस्तक है, जिसमें उसके मुख्य पात्र के, विनाश के नगर से स्वर्गीय नगर के सफर को दिखाया गया है। [4]इस पाठ में (और अगले तीन पाठों में), मैं संक्षेप में जीवन की बहुत सी समानताओं का सुझाव दूंगा। जो समानताएं उपस्थित श्रोताओं की आवश्यकताओं के बारे में सीधे तौर पर बोलती हों उन्हें विस्तार देकर लागू कर सकते हैं (और करना भी चाहिए)। [5](फेलिक्स के फलस्तीन से जाने और फेस्तुस के आने के सम्बन्ध में) जो कालानुक्रम हम दे रहे हैं उससे 59 ई. मेल खाता है। तिथि भी ''उपवास'' (प्रायश्चित के दिन) से मिलती है, जो उस वर्ष इतनी देरी से आया था कि समुद्र में जाना बहुत ही ख़तरनाक था। आयत 9 पर नोट्स देखिए। अगस्त का महीना

आयत 9 से पीछे की ओर गिनती करके निकाला गया। [6]सूबेदार एक सौ लोगों पर होता था (बेशक इसमें संदेह है कि उस यात्रा में यूलियुस के साथ और भी कई लोग थे)। पलटन 600 से 1000 तक पुरुषों की रेजिमेन्ट होती थी। इसकी तुलना 10:1 से करें और ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' पृष्ठ 197 पर नोट्स देखें। [7]विद्वान इस बात से संघर्ष करते हैं कि लूका और अरिस्तर्खुस को पौलुस के साथ जाने की अनुमति कैसे मिली। कई तो यहां तक मानते हैं कि लूका और अरिस्तर्खुस ने अपने आपको स्वेच्छा से पौलुस के गुलाम के रूप में पंजीकृत करवा लिया था ताकि वे उसके साथ जा सकें। दूसरे हैं जो यह अनुमान लगाते हैं कि लूका ने जहाज़ के डॉक्टर के रूप में काम करने के लिए अनुबन्ध पर हस्ताक्षर किए जबकि अरिस्तर्खुस पौलुस के सहायक के रूप में गया। इसका समाधान स्पष्टतया इतना स्पष्ट है कि इसे नज़रअन्दाज कर दिया जाता है: लूका और अरिस्तर्खुस ने जहाज़ पर बैठने का किराया दिया होगा। यात्री लोग मालवाहक जहाज़ों पर जाने के लिए भी भाड़ा देते थे (21:3)। सिकंदरिया के दो जहाज़ जिनमें बाद में सूबेदार ने अपने कैदियों को डाला (27:6; 28:11) भी तो किराया लेकर यात्रियों को ले जा रहे थे (27:37)। [8]क्या अरिस्तर्खुस इनमें से एक था? लगता नहीं। बाद में पौलुस ने अरिस्तर्खुस को ''मेरे साथ कैदी'' कहा (कुलुस्सियों 4:10); उसे भी गिरफ्तार किया गया होगा और उसने भी कैसर की दुहाई दी होगी। परन्तु, हमारे पाठ में अरिस्तरर्खुस ''दूसरे कैदियों'' से हटकर लगता है। वास्तव में, हम पक्का नहीं कह सकते कि कुलुस्सियों 4:10 में ''साथ कैदी'' का अर्थ यह है कि अरिस्तर्खुस को बन्दी बनाया गया था या उसने पौलुस की सेवा करने के लिए अपने आपको स्वयं ही बन्दी बनवा लिया (फिलेमोन 24 देखिए जो कुलुस्सियों की पत्री के लिखे जाने के समय ही लिखी गई)। अरिस्तर्खुस बाद में रोम में बन्दी तो हुआ, परन्तु हम पक्का नहीं कह सकते कि रोम जाने के समय वह बन्दी था या नहीं। [9]यूनानी शब्द *हेटेरो* है। यूनानी शब्द *होमो* का अर्थ है ''*उसी* प्रकार का कोई और।'' [10]इससे उनके रक्षकों के बाद के फैसले का पता चल जाता है; अगले पाठ में आयत 42 पर नोट्स देखिए।

[11]जॉन पोलोक, *द अपोस्टल्ज़ ए लाइफ ऑफ पॉल।* इससे स्पष्ट हो जाएगा कि यूलियुस के ''केवल'' सूबेदार होने पर भी उसे जहाज़ पर काफ़ी अधिकार क्यों था। [12]सम्भवत: राजा अग्रिप्पा अभी भी कैसरिया में था और आयत 1 के ''उन्होंने'' में उसे भी शामिल किया जा सकता है। [13]सम्भवत: वे कैसरिया से चले, जो फलस्तीन की मुख्य बन्दरगाह और वह नगर था जहां पौलुस दो वर्षों तक बन्दी रहा था। [14]अद्रमुत्तियुम एशिया के इलाके के पश्चिमी तट पर स्थित एक नगर था जो त्रोआस से अधिक दूर नहीं था। यह सम्भवत: एक तटीय जहाज़ था जो वापस अपनी बन्दरगाह की ओर जा रहा था। [15]लूका ने ''सत्कार किया'' के लिए डॉक्टरी शब्द का इस्तेमाल किया। क्या लूका ऐसे शब्दों का इस्तेमाल आम तौर पर करता था या पौलुस को जहाज़ पर लूका द्वारा दिए जाने वाले उपचार से अधिक की आवश्यकता थी? [16]एक बार फिर यह विचार करके कि सैदा की कलीसिया यरूशलेम से पौलुस द्वारा मसीहियों को भगाने के कारण बनी थी, हमें मसीही लोगों की दया का पता चलता है (8:1-4; 11:19)। ''प्रभु के लिए सब कुछ दांव पर लगाना'' पाठ में सूर और पतुलिमयिस में पौलुस के पहले पहल जाने पर नोट्स देखिए। [17]दो वर्ष पूर्व यरूशलेम को जाते हुए भूमध्य सागर के पार जाने में पश्चिमी हवा ने पौलुस की सहायता की थी (''प्रभु के लिए सब कुछ दांव पर लगाना'' पाठ में प्रेरितों 21:2-4 पर नोट्स देखिए)। अब वह और दूसरे लोग उल्टी दिशा में जाना चाहते थे, और हवा उस मार्ग के ''विरुद्ध'' थी जिधर वे जाना चाहते थे। [18]सम्भव है कि किनारे-किनारे जाते हुए उन्होंने कुछ व्यापारिक ठहराव भी किए। [19]किनारे-किनारे सेदा से मूरा जाने में आम तौर पर दस से पन्द्रह दिन लग जाते थे। वैस्टर्न टैक्स्ट में जोड़ा गया है कि इतनी यात्रा में चौदह दिन लग गए थे। [20]ये जहाज़ पश्चिम हवाओं के विरुद्ध नहीं चल सकते थे, इसलिए उन्होंने उत्तर की ओर मूरा और वहां से इटली जाना था।

[21]यह जहाज़ सिकंदरिया, मिसर का था। मिसर रोम को अनाज भेजने वाला प्रमुख देश था। 28:11 में हम सिकंदरिया का एक और जहाज़ देखेंगे। [22]एक पुरातन इतिहासकार ने ऐसे 180×45×43 फुट एक जहाज़ के बारे में बताया। जोसेफ़स ने एक और जहाज़ के बारे में लिखा जो सामान के अलावा छह सौ लोगों को ले जाता था। [23]कुछ पाण्डुलिपियों में 76 है, परन्तु अधिकतर में 276 है। [24]मूरा से कनिदुस लगभग 170

मील था। ''बहुत दिनों तक'' सम्भवत: दस से पन्द्रह दिनों को कहा गया होगा। [25]पिन्तेकुस्त के दिन क्रेते के लोग भी वहां थे (प्रेरितों 2:11); शायद उनमें से कई लोग मसीही बन चुके थे। बाद में पौलुस ने क्रेते में काम किया (तीतुस 1:5)। बाइबल के समयों में क्रेते के लोगों का नाम अच्छा नहीं था (तीतुस 1:12)। [26]मुझे ''शुभ लंगरबारी'' नाम अच्छा लगता है। हमारे जीवन की ''विपरीत हवाओं'' से थोड़ी देर और स्थान की राहत के लिए ''शुभ लंगरबारी'' से सम्बन्धित प्रासंगिकता बनाई जा सकती है। [27]आयत 20 पर नोट्स देखिए। [28]यह तथ्य कि ''उपवास के दिन बीत चुके थे'' 59 ईस्वी के वर्ष की पुष्टि करता है। प्रायश्चित के दिन का समय चांद को देखकर तय किया जाता था। 59 ईस्वी के पहले और बाद के वर्षों में पर्व का यह दिन बहुत पहले पड़ा था, जो उनके जल यात्रा जारी रखने से विनाश की पौलुस की भविष्यवाणी से मेल नहीं खाता था। [29]यूनानी शब्द के अनुवाद ''स्वामी'' को कई अनुवादों में ''कप्तान'' कहा गया है। आम तौर पर जहाज़ का मालिक ही कप्तान होता था। [30]पता नहीं उसे कैसे सुनाई दिया। शायद वह उस कॉन्फ्रेंस में ही था। शायद जहाज़ में यह बात फैल गई थी। उसने बाद में संकेत दिया कि जहाज़ के लोगों में से किसी ने उसकी बात नहीं मानी (आयत 21) इसलिए शायद उसने कोई सार्वजनिक घोषणा सुनी जिसके जवाब में उसने सब सुनने वालों को अपना विरोध जता दिया था।

[31]विलियम बार्कले, *द ऐक्ट्स ऑफ द अपोस्टल्ज़,* द डेली बाइबल स्टडी सीरीज़, rev. [32]यह काफी आश्चर्यजनक है। यदि तीन बार जहाज़ में मेरे साथ ऐसा हादसा हुआ होता, तो मेरे लिए किसी और जहाज़ पर बैठना कठिन होता! [33]नि:संदेह, कभी-कभी परमेश्वर ने विनाश की घोषणा को प्रार्थना के जवाब में उसे बदल दिया (उदाहरण के लिए, गिनती 14:11-24)। [34]यह जहाज़ में बैठे लोगों का बहुमत है या कॉन्फ्रेंस के लोगों का बहुमत? बाद में पौलुस ने जहाज़ के सब लोगों को डांटा (आयत 21), इसलिए शायद संचालक दल के लोगों ने हर किसी को फीनिक्स जाने के बारे में अपना निर्णय बताने के लिए कहा और बहुतों ने उसका समर्थन किया था। [35]यहां पर यूनानी शब्द अस्पष्ट हैं, परन्तु हमें उनकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। लूका के कहने का अभिप्राय यह था कि उस बन्दरगाह को सर्दी के थपेड़ों से सुरक्षित रखा गया था। [36]यूनानी शब्द का अनुवाद ''बड़ी'' उस शब्द का रूप है जिससे हमें अंग्रेज़ी का ''typhoon'' अर्थात ''नाविक'' शब्द मिला है। [37]''यूरकुलिन'' ''पूर्वी हवा'' के लिए यूनानी शब्द के साथ ''उत्तरी हवा'' के लिए लातीनी शब्द के मेल से बना शब्द है। [38]छोटी नाव पानी में छोड़ देने पर डूब जाएगी या टूटकर बिखर जाएगी, और किनारे तक पहुंचने के लिए बाद में इसकी आवश्यकता हो सकती है। अन्दर खींचने पर, सम्भवत: यह थोड़ी बहुत पानी में डूब गई होगी। [39]हम नहीं जानते कि रस्से किस दिशा में रखे गए थे या चरखी पर किस प्रकार चढ़ाए गए थे, परन्तु विचार करने योग्य बहुत सी सम्भावनाएं हैं। [40]किनारे पर पहुंचने से पहले वे पश्चिम की ओर पांच सौ मील तक बह गए थे। सुरतिस के चोरबालू दक्षिण की तुलना में अधिक निकट थे।

[41]''पिछले द्वार का फट्टा गिरा दें'' का अर्थ ''डैक के सभी सुराखों को बन्द करके सुरक्षित कर लें।'' अलंकार की इस भाषा का अर्थ है, ''अपना बचाव करने की पूरी कोशिश कर लें।'' [42]कुछ पाण्डुलिपियों में ''*हमने* अपने हाथों से'' है (देखिए KJV), परन्तु अधिकतर में ''*उन्होंने* अपने हाथों से'' है। [43]यूनानी शब्द के अनुवाद ''सामान'' का इस्तेमाल नये नियम में कभी-कभी घर के सामान के लिए किया जाता है (मत्ती 12:29; मरकुस 3:27; आदि)। अतिरिक्त सामान फैंकने के अलावा मैं जहाज़ के सदस्यों को मेज, कुर्सियों और तिजोरियों को भी समुद्र में फैंकते हुए देख सकता हूं। [44]ओरिन रूट, ed., *स्टैण्डर्ड बाइबल कमैन्ट्री: ऐक्ट्स।* [45]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है, तो यह ज़ोर दिया जाना चाहिए कि विश्वासी तथा अविश्वासी दोनों प्रकार के लोगों पर तूफ़ान एक जैसे ही आते हैं। सुनने वालों को यह समझ आने पर कि विश्वासियों के पास तूफ़ानों का सामना करने के लिए ऐसे साधन हैं जो अविश्वासियों के पास नहीं हैं मसीही बनने के लिए उत्साहित किया जा सकता है।